|| भौम प्रदोष व्रत कथा ||

PDF Created By : www.janbhakti.in

|| भौम प्रदोष व्रत कथा ||

एक नगर में एक वृद्ध महिला रहती थी जो हनुमान जी (Lord Hanuman) की परम भक्त थी। वह प्रत्येक मंगलवार को नियमपूर्वक व्रत रखकर हनुमान जी की आराधना करती थी। एक दिन हनुमान जी ने उसकी भक्ति की परीक्षा लेने का विचार किया। वे साधु का वेश धारण कर उस वृद्धा के घर पहुंचे और भोजन की याचना की। वृद्धा ने उन्हें भोजन देने से पहले जमीन लीपने को कहा परन्तु हनुमान जी ने इनकार कर दिया।

फिर हनुमान जी (Lord Hanuman) ने वृद्धा से कहा कि वे उसके पुत्र की पीठ पर आग जलाकर भोजन पकाएंगे। वृद्धा दुविधा में पड़ गई परन्तु उसने अपने पुत्र को हनुमान जी के हवाले कर दिया। हनुमान जी (Lord Hanuman) ने पुत्र की पीठ पर आग जलाई और भोजन पकाया। भोजन के बाद जब हनुमान जी (Lord Hanuman) ने वृद्धा को पुत्र को बुलाने को कहा तो वह रोने लगी।

PDF Created By : www.janbhakti.in

|| भौम प्रदोष व्रत कथा ||

परन्तु जब उसने पुत्र को पुकारा तो वह जीवित था। यह देख वृद्धा को बहुत आश्चर्य हुआ और वह हनुमान जी के चरणों में गिर पड़ी। तब हनुमान जी ने अपना असली रूप दिखाया और वृद्धा को आशीर्वाद दिया। इस कथा से पता चलता है कि हनुमान जी अपने भक्तों की हर परीक्षा लेते हैं और अंत में उन्हें आशीर्वाद देते हैं। भौम प्रदोष व्रत हनुमान जी और शिव जी की आराधना का पर्व है जिससे मंगल दोष, ऋण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं दूर होती हैं।

भौम प्रदोष व्रत (Bhaum Pradosh Vrat) की कथा भक्ति, श्रद्धा और अनुशासन का प्रतीक है। यह व्रत भगवान शिव की कृपा पाने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का एक शक्तिशाली साधन माना जाता है। इस व्रत को सही विधि-विधान और भक्ति भाव से करने से मानसिक, शारीरिक और आर्थिक कल्याण मिलता है।

PDF Created By : www.janbhakti.in